अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 2, (April-June 2022

डॉक्टर क्षमा शर्मा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

शोध निर्देशक
डॉ अमर ज्योति एम ए ,एम फल, पीएच डी
नेट स्नातकोत्तर अनुवाद डप्लोमा
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष स्नातकोत्तर केंद्र उच्च
शक्षा और शोध संस्थान
द क्षण भारत हिंदी प्रचार सभा, धारवाड़

वनिता .एम,
रजिस्टर नंबर:**DR-PHD/17/17**
द क्षण भारत हिंदी प्रचार सभा,
उच्च शक्षा और शोध संस्था ,धारवाड़ ।

व्यक्तित्व एवं कृतित्व का संबंध अन्योन्या श्रत है । चाहे प्रत्यक्ष हो या अप्रत्यक्ष साहित्यकार के व्यक्तित्व का प्रतिबिंब उनके कृतित्व में निहित होती ही है । व्यक्तित्व में साहित्यकार की संवेदना ओं के साथ जन्म परिवार परिवेश परिवेश गत उनके अनुभव एवं प्रभाव, प्रभाव वक्त वशेषताएं समाहित होती है। साहित्यकार का व्यक्तित्व उसके समग्र कृतित्व के साथ जुड़ा हुआ रहता है। उनके उ चत मूल्यांकन करने के लए उनके व्यक्तित्व का परिचय होना आवश्यक है जिससे हम उनकी मनोवैज्ञानिक कथा एवं उनके दृष्टिकोण के आधार पर उनके समग्र साहित्य से परि चत होकर उनकी वशेषता क्या है उनके परिप्रेक्ष्य क्या है यह सब हम जान सकते हैं ।

1.1 जन्म:

हिंदी के कथाकार क्षमा शर्मा का जन्म 30 अक्टूबर 1955 को आगरा में ब्राम्हण परिवार में हुआ था इनका जन्म सतमासी हुआ था । जन्म से ही वह मृतवत बालक के समान थी। डॉक्टर शर्मा शर्मा के पताजी श्री राम स्नेही शर्माते और माता श्रीमती कईलादेवी शर्मा रही है । उनके पताजी रेलवे में कार्यरत रहे थे। इस लए क्षमा जी का बचपन अलग-अलग स्थानों एवं स्थितियों में बदलता रहा था। इसके अलावा इनके तीन भाई और दो बहने हैं अपने परिवार में क्षमाजी सबसे छोटी थी ।

1.2 परिवार:

डॉ श्यामा शर्मा के पताजी श्री राम स्नेही शर्मा बहुत सख्त स्वभाव की थी। उनकी माताजी मन से भावुक एवं वचारों से दृढ़ रही है। उनके पता को नृत्य संगीत तथा लड़ कयों का सजना सवरना कतई पसंद नहीं था। परंतु समय के साथ इनके स्वभाव में भी परिवर्तन हुआ और क्षमा जी को भाषण कैसे दिया जाता है ? इसकी दीक्षा भी दी। इनके परिवार में सबसे बड़े भाई खुले दिमाग वाले थे। बु द्धमान एवं व्यवहार कुशल भी रहे हैं। बड़े भाई की पहली नौकरी और पहली तनख्वाह से क्षमाजी को फ्रॉक एवं बिस्कुट के साथ प्लास्टिक का मोर मलाता वही उनके बचपन के आनंद एवं खुशी के क्षण रहे थे। मंजिलें भाई युद्ध प्रय थे। उन्हें पहलवान का शौक रहा था। स्वभाव में झगड़ालू थी। जिसके परिणाम परिवार की बहनों को भुगतने पड़े थे। समाज में उन्हें अपमानित होना पड़ा था और इसका सबसे अ धक प्रभाव क्षमाजी पर पड़ा था उनके छोटे भाई का कोई रोजगार नहीं था ।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 2, (April-June 2022

1.3 पारिवारिक जीवन:

क्षमा जी का पालन पोषण संयुक्त परिवार में हुआ था। इन का बचपन सामान्य नहीं था। क्षमाजी स्वयं कहती है "बचपन की कोई स्मृति तो ऐसी नहीं जो बहुत उल्लास और आनंद से भरी हो"1। क्षमाजी का पारिवारिक जीवन बेहद दुख से भरा रहा । जीवन में अनेक कटु अनुभवों का सामना कया। परिवार में बहुत सी बातें ऐसी थी जिन्हें देखकर क्षमा जी का मन दुख से भर जाता था । जिस परिवार में लड़की का जन्म होता है वही उसके साथ अन्याय होता है उन्हें सहा भी और देखा भी। घर में उन्हें कभी मनपसंद भोजन नहीं मल पाया है पर घर में तो पुरुषों के मनपसंद का भोजन पकाया जाता था। इनके परिवार में स्त्रियों को दुय्यम दर्जे का समझा जाता था।

पताजी के बीमारी के दौरान क्षमा जी को अनेक कठिनाइयों से गुजरना पड़ा था। घर में अत्यंत गरीबी रही थी। रिश्तेदारों में भी ऐसे समय काम नहीं आए ,इस बात का भी अनुभव हुआ था। परिवार में गरीबी इस हद तक हो चुकी थी क घर में अनाज तक नहीं होता था। क्षमाजी कहती है। "एक दिन घर में खाने को कुछ नहीं था पड़ोसी ने गाय को खलाने के लए कीड़े पड़ा बेसन दे गई थी। मां ने उसे थोड़ा साफ कया और मले आटे से पताजी को भोजन बनाया "2। उनके पता के मृत्यु के बाद उनकी घर की स्थिति और भी बिगड़ गई । बहुत आ र्थक संकट से उन्हें गुजारना पड़ा । क्षमा जी को आज भी इस बात का दुख है क उनके पता के अंतिम दिन बहुत ही कठिनाई और दुख से भरे बीते उन्हें बचपन में ही पुरुष प्रधान समाज की बर्बरता का अनुभव हुआ था। क्षमाजी दुनियादारी की सच्चाई को बचपन से ही जान गई थी क कमजोर व्यक्ति के आंसुओं की कोई कीमत नहीं होती। इसी सच्चाई के साथ अपने आप को समझ रही थी। निरंतर संघर्ष करने के कारण वह अपने आप को लड़कों के समान समझती थी। परंतु समाज में यह स्वीकार नहीं था ।उसी समय से क्षमा जी का समाज के प्रति सच्चाई एवं स्त्री के प्रति हक और अ धकार के बारे में सोच वचार करना शुरू कया ।

1.4 शक्षा:

क्षमाजी के शक्षण के बारे में कहना है तो यह कह सकते हैं क इनकी पता रेलवे में नौकरी करने के कारण से क्षमा जी बहुत जगह रह चुके और वही शक्षा प्राप्त की । प्रारं भक शक्षा कन्नौज में हुई। छठी से आठवीं कक्षा तक 2 वर्ष आगरा में पड़ी। आठवीं से 12वीं कक्षा तक इनकी पढ़ाई हाथरस में हुई थी। 12वीं कक्षा के इम्तिहान के बाद बीमार पता की मृत्यु हो गई थी। बाद में वे अपने बड़े भाई जो दिल्ली में रहते थे वहां रहकर बीए की पढ़ाई 'देशबंधु' कॉलेज से पूरा कया। और PHD की पढ़ाई क्षमा जी ने शादी के बाद पूर्ण की। अपने बड़े भाई के प्रति क्षमा जीब हुत श्रद्धा वान है। क्यों क उन्हीं की वजह से अपनी पढ़ाई पूर्ण कर पाई। उनके बड़े भाई अपने परेशानियों के बावजूद क्षमाजी को पढ़ाया।3 क्षमा जी दसवीं तक आते-आते शरद चंद्र, प्रेमचंद्र, दिनाकर, जयशंकर प्रसाद, सुभद्रा कुमारी ,चौहान महादेवी वर्मा आदि साहित्यकारों की रचनाओं को अपने बड़े भाई के कारण पढ़ पाई थी । इस तरह क्षमा जी जीवन की वषमताओं, गरीबी के साथ-साथ अपनी परिस्थितियों से समझौता करके

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 2, (April-June 2022

संघर्ष के साथ अपने जीवन के संघर्ष से बलवती होती जाती है और उन्हीं संघर्षों की वजह से वह जीवन में साहित्य की रचना का प्रेरणा प्राप्त की ।

1.5 साहित्य सृजन एवं व्यवसाय:

क्षमा जी की अध्या पका राजकुमारी प्रसाद रे डयो नाटकों की कलाकार थी और एक दिन वह क्षमा जी को रे डयो में काम करने का मौका दिया ।तब वह स्नातक के प्रथम वर्ष में थी । एक प्रोग्राम के लए उन्हें □15 मलते थे । सन 1975 में अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष घो षत कया गया जिसे अखबार में पढ़ कर एक हस्त ल खत लेख 'अमर उजाला 'में क्षमा जी ने भेजा ।आश्चर्य हुआ क वह लेख छप गया था ।रे डयो प्रोग्राम और अखबार में लेख छपने से क्षमा जी की आत्म वश्वास बढ़ने लगी । मत्रों के कहने पर 'वॉइस ऑफ अमेरिका' के कार्यक्रमों का हिंदी में अनुवाद कया जिससे उन्हें पैसा मला ।क्षमा जी को उस वक्त पैसों की सख्त जरूरत रही थी।

एक बार एक सफर में शुभावर्मा से मुलाकात हुई जो 'साप्ताहिक हिंदुस्तान 'में कार्यरत थी। उन्होंने क्षमाजी को बच्चों के लए कहानी लखने को कहा। लखने का इतना अनुभव नहीं था फर भी क्षमा जी अपनी जरूरतों के कारण लखना शुरू कया । इस तरह उनकी लेखन कार्य शुरू हुआ ।इन से प्रभा वत' दैनिक हिंदुस्तान ' के रीतीश वद्यालंकार और वद्यासागर व शष्ट ने उन्हें बुलाकर पुस्तक समीक्षा करने को कहा तो क्षमाजी लखती रही और उन्होंने केवल लखने को ही नहीं कहा , उसकी त्रुटियों को भी निकाली। क्षमाजी लेखन कार्य सीखते रहे। हिंदुस्तान पत्रिका में भी लखती रही। इस प्रकार क्षमाजी ने अपने आपको लेखन में व्यस्त कर लया था ।

श्यामा जी नई दिशा की को शश में लगी रही साथ में अपना काम भी करती रही। दैनिक हिंदुस्तान, साप्ताहिक आकाशवाणी और हिंदुस्तान आदि समाचार पत्रों तथा आकाशवाणी के लए भी लखती रही। ' अ णमा' पत्रिका के लए प्रेम कथा लख दी और वह छप गई। नवभारत टाइम्स में भी लखती है। उनका लखा हुआ उनके बड़े भाई पढ़ते और क मयों को ठीक कर देते थे। इसके बीच उनके ' एम ए 'का परिणाम आया,जिनमें उन्हें केवल 58% अंक आए थे तो बड़े भाई दुखी हुए और उन्होंने क्षमा जी को लखने के लए मना कर दिया। क्षमा जी मानी नहीं लखती रही पढ़ाई भी करती रही क्यों क लखना बंद करने से आय का साधन ही नहीं रहेगा।

श्यामा जी नई दिशा की को शश में लगी रही साथ में अपना काम भी करती रही। दैनिक हिंदुस्तान, साप्ताहिक आकाशवाणी और हिंदुस्तान आदि समाचार पत्रों तथा आकाशवाणी के लए भी लखती रही। ' अ णमा' पत्रिका के लए प्रेम कथा लख दी और वह छप गई। नवभारत टाइम्स में भी लखती है। उनका लखा हुआ उनके बड़े भाई पढ़ते और क मयों को ठीक कर देते थे। इसके बीच उनके ' एम ए 'का परिणाम आया,जिनमें उन्हें केवल 58% अंक आए थे तो बड़े भाई दुखी हुए और उन्होंने क्षमा जी को लखने के लए मना कर दिया। क्षमा जी मानी नहीं लखती रही पढ़ाई भी करती रही क्यों क लखना बंद करने से आय का साधन ही नहीं रहेगा।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 2, (April-June 2022

नवंबर 1976 में प्र शक्षु उप संपादक की मांग की एक वज्ञापन आती है और शुभाधी उन्हें उसे अप्लाई करने को कहती है क्षमा जी पत्रकारिता नहीं जानती थी, पर एक नौकरी की तलाश थी। उसके बाद एक ल खत परीक्षा के बाद उन्हें 30 जनवरी 1977 को हिंदुस्तान टाइम्स से ताल मला । उसमें लखा था आप आकर साक्षात्कार दे । साक्षात्कार के दौरान वह कहती है क पताजी नहीं है ,भाइयों पर बोझ बनना नहीं चाहती इसी लए वह काम करने आई है ,काम करना चाहती है । बस साक्षात्कार हो गया। उसके बाद वह भूल गई थी काम उसको मलेगा बाद में 31 जनवरी 1977 के एक शाम शुभाजी इनके घर आते हैं और उन्हें काम मलने की खुशखबरी देते हैं। उनकी खुशी का कोई अंदाजा नहीं। शुभाजी के कहने पर वे अगले ही दिन ऑ फस जाकर नियुक्ति पत्र पर हस्ताक्षर कए। क्षमा जी की यह पहली नौकरी थी जिस पद पर आज तक कार्यरत है ।

क्षमाजी मेहनती तो थी पर जीवन मान सक रूप से शांत था। क्षमाजी कहती है क "इस तरह मेरी नौकरी की शुरुआत हुई। लोग कहते हैं मैं नंदन में ट्रेनी आई थी, सहायक संपादक बन गई।"4 इस प्रकार क्षमाजी सहायक संपादक बनी रही, और तुरंत बाद में इनके ववाह की बात सामने आई। इस प्रकार क्रमशः क्षमाजी के जीवन की वकास यात्रा आगे बढ़ती चली गई।

1.6 ववाह:

समाज के ववाह की कहानी भी दिलचस्प रही है। ववाह संबं धत क्षमा जी के कटु अनुभव और बहन की शादी के दुखद अनुभव से उनका मन रिक्त हो गया था । ववाह में दहेज लेन दे ना होने बिल्कुल पसंद नहीं था। इसी लए ववाह से इनकार करती रही थी। एक दिन अचानक बड़े भाई के मत्र सुधीश पचौरी क्षमा जी की मुलाकात हुई और उनके द्वारा क्षमा जी के लए शादी का प्रस्ताव आया। क्षमा क जैसे व्यक्ति जीवनसाथी के रूप में चाहती थी बिल्कुल वैसे ही बल्कि उससे कहीं अ धक अच्छे रहे हैं सुधीशजी । क्षमाजी कहती है-" कोई दहेज नहीं ,कोई लेन-देन नहीं ,कर्मकांड नहीं , ववाह भी कोर्ट में और हम दोनों जीवन भर बहुत अच्छे मत्र की तरह रहेंगे ऐसा वादा था उनका" 5। सुधीर जी बहुत क्रो ध थे,उनके स्वभाव से परि चत उनके भाई भी इस ववाह के लए इंकार कया पर क्षमा जी मान गए और 17 अगस्त 1977 को अदालत में उनका ववाह संपन्न हुआ । बिना लेनदेन का यह अनोखा ववाह था। क्षमाजी ने अपने घर से एक साड़ी तक नहीं ली और ना ही सुधीर जी ने शादी की खुशी में छोटे भाई से लाई मठाई ग्रहण की। क्षमाजी का ववाह सहज और अत्यंत साधारण ढंग से संपन्न हुआ था।

1.7 वैवाहिक जीवन:

क्षमा जी का वैवाहिक जीवन सामान्य रहा । उनके पति कॉलेज में पढ़ाते थे। पढ़ाई में रु च रखने वाले सुधीर जी क्षमा जी को भी पढ़ने लखने में प्रेरित करते रहते थे।यहां तक क जब क्षमा जी पढ़ने लखने बैठती तो वे खुद खाना बनाकर जिम्मेदारियों को बांट लेते थे। उनकी पढ़ाई पूरी करने का आग्रह भी उन्होंने ही कया।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 2, (April-June 2022

क्षमाजीकी प्रथम संतान के रूप में उनके बेटे का जन्म अप्रैल 1979 में हुआ तथा दूसरी संतान ,उनकी उनकी बेटी 1984 में हुई थी ।बच्चों के लालन पोषण का अ धकांश भाग उनके पति सुधीर जी ने ही उठाया था क्षमाजी कहती है क हसुधीर जी का मानना है क पत्नी कभी छोटी नहीं होती। उसे भी अ भव्यक्ति का अ धकार है। क्षमाजी ही मानती है क उन्हीं के अच्छे व्यवहार की बदौलत और प्रेरणा से पुस्तके लख पाई। क्षमाजी का कहना है क "मेरी असली जीवन तो ववाह के बाद शुरू हुआ था "6इसी वाक्य से क्षमा जी के वैवाहिक जीवन के प्रति सत्यता एवं मान सक तथा स्पष्ट होती है। अपने पति के अमूल्य सहयोग से आगे बढ़ती जा रही थी। सुधीशजी ने क्षमा जी को पत्रकारिता में डप्लोमा कराया और उन्हीं की प्रेरणा से 1997 में क्षमाजी अपना शोध कार्य पूर्ण कया।

1.8 स्वभाव एवं अ भरु च:

डॉ क्षमा शर्मा का स्वभाव अत्यंत सीधा सरल रहा है क्षमा जी की दृष्टि अत्यंत सूक्ष्म रही । वे नारियों के ऊपर पैनी दृष्टि डालकर उसकी हर एक समस्याओं के बारे में अपनी लेखनी डाली है ।उनके स्वभाव में भावों के साथ वचारों की भी दृढ़ता दिखाई देती है। क्षमा जी की अ भरु च है नारी की व भन्न स्थितियां, पर्यावरण , और देश के भावी भ वष्य सृष्टि कर्ता बच्चों के बारे में अपनी लेख, अपनी कथा साहित्य काकेंद्र बनाया है ।

1.9 व्यक्तित्व:

डॉ श्यामा शर्मा का व्यक्तित्व बहुआयामी एवं आक र्षत है । रंग सांवला है पर रूप मनोहर ही है। संगठित शरीर और उसमें बड़ी बड़ी आंखें इनके व्यक्तित्व को और भी प्रभावी एवं आक र्षत बनाती है। उनके भाल पर बड़ी बिंदी चेहरे की प्रसन्नता में वृ द्ध करती है। वे मृदुभाषी है। हमेशा मीठी मधुर भाषा से सबके साथ पेश आती है। मृदुभाषी के साथ मतभाषी है, व्यवहार कुशल भी है। अंतर मुख होते हुए भी हमेशा काम में व्यस्त रहती है। उनका जीवन संघर्षशील व्यक्तित्व का सूक्ष्म रहा है । पत्रकारिता के व्यवसाय से जुड़ी ,देश वदेश की यात्राएं करने वाली, महिला संगठनों के साथ ट्रेड यूनियन ,पत्रकारों की यूनियन, पर्यावरण , फल्मों ,दूरदर्शन, आकाशवाणी में रहकर समाज की अन्य संस्थाओं से संपृक्त होते हुए बाल साहित्य सृजन एवं नारी लेखन के कारण उनका व्यक्तित्व 'डाइने मक' स्त्री के रूप में उभरता है ।प्रेम उनके व्यक्तित्व का अ भन्न पहलू है। स्वा भमानी होते हुए आत्मनिर्भरता उनकी वशेषता रही है । क्षमाजी संवेदनशील भावुक कोमल स्वभाव वाली महिला है पर सामाजिक एवं पारंपरिक मूल्यों के आधार तो उनको सहते कठोर ,गंभीर स्वयं निर्णय लेकर, जीवन की सुंदरता को सजाकर साकार करने वाला उनका अपना निराला ही व्यक्तित्व रहा है ।

क्षमा जी को बच्चों के प्रति काफी प्रेम और लगाव है। क्षमा जी को फूलों से बहुत प्यार है ।जब वह स्विजरलैंड गई थी वहां की नजारा देखकर वह यहां लखती है लखती है क यहां के घरों की बालकानियों , यहां क पेड़ों के तनों में भी फूल ही फूल उगे हैं ।यहां के लोगों को हर जगह फूल उगाने,..... का बहुत शौक है 7।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 2, (April-June 2022

1.10 डॉ क्षमाशर्मा का जीवन के प्रति दृष्टिकोण:

क्षमा जी का जीवन के प्रति दृष्टिकोण उदार, बहुमुखी और व्यापक रहा है। क्षमाजी समाज के प्रतिभा संपन्न साहित्यकारों में अपने आप को बहुत छोटी मानते हुए उनके प्रति श्रद्धा भाव भी रखती है । वामपंथी वचारों से प्रभा वत होने से उनका मानना है क हर व्यक्ति को जीवन आवश्यक चीजों की सु वधाएं मलनी ही चाहिए। सबको जीवन जीने का अ धकार है। क्षमाजी नारीवाद से प्रभा वत रही है। स्त्रियों की शक्षा को अत्य धक महत्व देती है। उनकी दृष्टि से शक्षा के अवसर एवं उसके प्रति जागृति से ही लड़की का भ वष्य निर्धारित होता है। छोटे शहरों की लड़ कयां सामाजिक संस्कारों के कारण वश दब्बू होती है। उनका कहना है क गांव और शहर वादी वमर्श के लए स्वर्ग की आ खरी सीडी क्यों ना हो लड़ कयों के लए इतना गहरा कुआं है जिससे वह मुश्किल से निकल पाती है ।परंपरा ,संस्कृति ,मर्यादा आदि के नाम पर बार बार इन्हें इस अंधे कुएं में धकेल जाता है ।8 छोटे शहरों में लड़ कयों को शक्षा का मौका नहीं मला। वह उन्हें मलना चाहिए दूसरी ओर क्षमा जी की दृष्टि से सत्य है क आज कस्बे कस्बे के उच्च शक्षा प्राप्त लड़ कयां घर में बैठी है उनके पास करने के लए कुछ नहीं है सवाय ववाह के इंतजार के।9

क्षमा जी आत्मा वश्वास भरी लड़ कयों और उनके पहनावे के बदलाव को देखते हुए बहुत खुश होती है। उनका मानना है क ,"लड़ कयों को भाषा मलना उनका आत्मनिर्भर होना रूढ़ियों से परे निकलकर आत्म वश्वास से भरे कपड़े पहनना यही उनकी मुक्ति का पहला कदम है।"10 श्यामा जी के जीवन दृष्टि मस्त्री के प्रति वचार है क," मैं सामाजिक तौर पर एक मजबूत स्त्री को देखना चाहती हूं जिससे कोई यह कहने की हिम्मत ना कर सके, औरत हो औरत की तरह रहा करो। जहां स्त्री का जन्म लेना ही उनका अपराध ना हो जाए।"11

1.11 साहित्य सृजन की प्रेरणा एवं प्रोत्साहन:

डॉ क्षमा शर्मा का नारी- वमर्शकार का व्यक्तित्व निरंतर वक सत होने में उनके स्वभाव व उनके स्वानु भावों की वचार अ भव्यक्ति ही सहायक हुआ है।उनके प्रेरक व्यक्तित्व में क्षमाजी के बड़े भाई एवं पति सुधीर जी का अ धक योगदान रहा है।बचपन में बड़े भाई द्वारा दिए गए शक्षा संस्कार पढ़ाई गई साहित्य एवं साहित्यकारों की रचना सहायक बने। क्षमा जी भले ही भावुक हो पर उनकी कहानियों में वास्त वकता का पुट रहा है।उनकी प्रखर नारी चेतना तथा नारी के प्रति उनकी प्रामा णक मानवीय संवेदना यही उनकी कहानियों और उपन्यासों की प्रेरणा बनी जिससे नारीवाद चेतन के प्रति उनकी गहन गंभीर अटूट आस्था के दर्शन होते हैं अतः यह कहना उ चत होगा क उनकी सर्फ का खाली भावुकता नहीं है,उनका सच्चा अनुभव कहानियों के रूप में व्यक्त हुई ।'समीक्षा 'में स्त्री केंद्रित कहानी ;'रास्ता छोड़ो डा लंग' में इस

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 2, (April-June 2022

तथ्य को उजागर करते हुए, प्रेम शशांक लखते हैं- "इन कहानियों के चत्र कहानीकार के काफी निजी अनुभव जुड़े हुए हैं। 12

1.12 समीक्षक व्यक्तित्व:

डॉ श्यामा शर्मा का समीक्षक एवं परीक्षक व्यक्तित्व भी खुलता हुआ दिखाई दे रहा है। उन्होंने शैलेंद्र सागर ,रजनी गुप्ता द्वारा संपादित पुस्तक 'आजाद औरत कतनी आजाद 'का परीक्षण "स्त्री वमर्श से गायब क्यों है ग्रामीण स्त्री"?13 शीर्षक के अंतर्गत कया है। रीता भदोरिया द्वारा ल खत काव्य संग्रह 'पानी पर गांठ 'का परीक्षण 'भरोसा जागती क वताएं '14शीर्षक के अंतर्गत कया है। यह एक करवा चौथ व्रत पर एक टीका टिप्पणी है। देवेंद्र मेवाड़ी द्वारा ल खत 'मेरी यादों का पहाड़' पुस्तक की समीक्षात्मक टिप्पणी 'कानों में बजती है धन- मन , धन-मन 15 शीर्षक के अंतर्गत की है।

इसी प्रकार डॉक्टर शमा शर्मा के कादंबिनी अगस्त 2012 में 'दूसरे को आजादी देने से तय होगी अपनी आजादी', कादंबिनी जुलाई 2007 में 'हरियाली और खूबसूरती का नाम है श्रीलंका ',कादंबिनी अक्टूबर 2003 में 'औरतों को देवी मत बनाइए', कादंबिनी फरवरी 2014 'हिग्स बोसोन'और बसंती' शीर्षक से लेख लखकर अपने सृजन के बहुआयामी व्यक्तित्व का परिचय दिया है।

1.13 पुरस्कार एवं सम्मान:

अ धकतर स्त्री के बारे में लखने वाली ले खका क्षमा शर्मा एक प्र सद्ध कथाकार एवं पत्रकार है जो हिंदी साहित्य के क्षेत्र में अपना ही प्रतिष्ठित और सुनिश्चित स्थान बनाया है। उन्हें उनके अनेक साहित्यिक योगदान के लए कई पुरस्कारों से सम्मानित कया गया है। सरकारी ,अर्द्ध सरकारी और निजी संस्थाओं द्वारा पुरस्कारों से पुरस्कृत कया गया है जो इस प्रकार है-

(1) हिंदी अकैडमी दिल्ली द्वारा दो बार पुरस्कृत की जा चुकी है ,जिसमें से एक बार उनका उपन्यास 'दूसरा पाठ' के लए सम्मानित कया गया है।

(2)बाल कल्याण संस्थान कानपुर द्वारा 'बाल साहित्य पुरस्कार 1997-98 से सम्मानित कया गया है।

(3) इंडो -रूसी क्लब,दिल्ली द्वारा सम्मानित कया गया है।

(4)सोनिया गांधी ट्रस्ट दिल्ली द्वारा सम्मानित कया गया है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 2, (April-June 2022

1.14 कृतियों के व वध कोण:

(1) डॉ श्यामा शर्मा की महिला संगठनों और पत्रकारों की यूनियन में स क्रय भागीदारी रही है।
(2) डॉक्टर क्षमाजी ले खका संघ की आजीवन मानद सदस्य है
(3) डॉक्टर क्षमाजी दो बार इं डयन प्रेस कोर की प्रबंध स मति के सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रमुख रही है।
(4) डॉक्टर क्षमाजी दूरदर्शन के राष्ट्रीय पुरस्कार की जूरी में (2001-2002) में महत्वपूर्ण कार्य कर चुकी है। डॉक्टर क्षमा जी 31 वर्ष से हिंदुस्तान टाइम्स की बाल पत्रिका 'नंदन 'से संबंध है । वर्तमान में 'नंदन' की कार्यकारी संपादक है।
(5) भारत सरकार के सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने उन्हें 28 जून 2000 को उनकी पुस्तक 'स्त्री का समय 'के लए 'भरतेंदूहरिश्चंद्र पुरस्कार' के अंतर्गत 'प्रथम ले खका पुरस्कार से पुरस्कृत कया है।

2 कृतित्व:

2.1 प्रस्तावना:

डॉक्टर क्षमा शर्मा नारी वमर्श की बहुत च र्चत ले खका है। हिंदी कथा साहित्य की बहुमुखी, बहुआयामी कथाकार के रूप में प्रख्यात है। क्षमा जी पछले दो-तीन दशकों से अनवरत लेखन कार्य द्वारा मौ लक साहित्य सृजन करती आ रही है ।उनका कथा साहित्य व वधता से पूर्ण रहा है। उनके लेखन का दायरा बहुत वस्तृत रहा है। इसमें उन्होंने समाज के हर पहलू को उजागर कया है। इनके कथा साहित्य के केंद्र में नारी है, समाज में नारी की बदलती स्थिति को अपनी कथा साहित्य में रेखां कत कया है ।
इस संदर्भ में 'समीक्षा 'में स्त्री केंद्रित कहानी 'रास्ता छोड़ो डा र्लंग' में प्रेम शशांक का वक्तव्य उल्लेखनीय रहा है। जैसे- नए-नए चरित्रों में लाना , रचनात्मक की असली निशानी है । ले कन स्त्री केंद्रित कहानियां अंत तक च कत करता है। कई अर्थों में यह कहानीकार की सीमा की ओर भी संकेत करता है। 16 इस से ज्ञात होता है क क्षमा शर्मा की स्त्री केंद्रित कहानियों की संख्या अत्य धक रही है ।

2.1.1 कहानी संग्रह:

काला कानून- कहानी संकलन 1982 में देवदार प्रकाशन द्वारा प्रका शत कया गया है। इसमें 18 कहानियां संक लत है। इस पुस्तक में शा मल कहानियां क्षमा जी की आरं भक कहानियां रही है। क्षमाजी कहती है," जैसा बच्चा ककहरा "सीखता है और उसे बार-बार लखना चाहता है,

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 2, (April-June 2022

टेढ़े -मेढ़े अक्षर भी उनके लए अपार संतोषकारक होते हैं यह कहानियां भी उसी का करें ककहरे की तरह मुझे लगती है ।17

काला कानून कहानी संग्रह में क्षमाजी ने स्त्री की व भन्न स्थितियों में होने वाले उत्पीड़न, आक्रोश ,छटपटाहट को बहुत ही अच्छी तरह से समाज के सामने रखकर सोचने के लए ववश कया है।

2.1.2 कस्बे की लड़की:

यह कहानी-संकलन राजधानी प्रकाशन द्वारा 1989 में प्रका शत कया गया । इस कहानी संकलन में कुल 14 कहानियां संक लत की गई है। यह कहानियां समय-समय पर साप्ताहिक हिंदुस्तान, सारिका ,साक्षात्कार ,अमर उजाला ,आज, जागरण आदि में प्रका शत हुई है। इनमें से कुछ कहानियां पंजाबी एवं गुजराती में अनुदित हुई है। क्षमा जी ने इस दूसरे कथा संग्रह की कहानियों में कस्बे की स्त्रियों की तनाव ग्रस्त अवस्था, उनके संघर्ष को चत्रित कया है ।

2.1.3 घर-घर तथा अन्य कहानियां:

डॉक्टर क्षमा शर्मा द्वारा ल खत यह कहानी संग्रह 1993 में स चन प्रकाशन नई दिल्ली ,द्वारा प्रका शत कया गया है। इसमें कुल 16 कहानियां संग्रहित की गई है। इस कहानी संग्रह की कहानियों में नारी चंतन स्पष्टता दृष्टिगोचर होता दिखाई देता है। कहानियां नारी के व वध रूपों का चत्रांकन करती है।

2.1.4 थैंक्यू सद्दाम हुसैन:

डॉक्टर क्षमा शर्मा का यह कहानी संकलन भारतीय प्रकाशन संस्था द्वारा 1997 में प्रका शत कया गया है। इसमें 14कहानियां संक लत की गई है । यह कहानियां स्त्री की बदलती तस्वीर को समाज के सामने रख रही है। क्षमा जी का मानना है क स्त्रियां अपनी भू मका बदल रही है।

2.1.5 लव स्टोरीज:

लव स्टोरीज कहानी संग्रह 1998 में आत्माराम एंड संस द्वारा प्रका शत कया गया है। इसमें 48 कहानियां संक लत है। इस कहानी संग्रह में क्षमाजी ने स्त्री मुसीबतें जो जिंदगी भर खत्म नहीं होती, नारी का लगातार पीछा करती है, इसी परिवेश का अपूर्व चत्रण कया है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 2, (April-June 2022

2.1.6 21 वी सदी का लड़का :

डॉ क्षमाशर्मा के इस कहानी संकलन का प्रकाशन 1999 सामयिक प्रकाशन द्वारा प्रका शत हुआ ।इसमें कुल 22 कहानियां संक लत है। इन कहानियों में उन स्त्रियों की कठिनाइयों को समाज के सामने लाने का प्रयास कया है जो कसी को दिखती ही नहीं।

2.1.7 रास्ता छोड़ो डा र्लंग:

इस कहानी संकलन का प्रकाशन 2008 में वाणी प्रकाशन द्वारा प्रका शत कया गया। यह कुल 41 कहानियों का संकलन है। इस कहानी संग्रह में क्षमाजी ने ताकत और पैसे के बल पर टिके समाज की एक-एक प्रति खोली है ।

2.1.8 नेम प्लेट:

डॉक्टर क्षमा जी इस कहानी संकलन का प्रकाशन राजकमल प्रकाशन द्वारा प्रका शत कया गया है । इस कहानी संग्रह में कुल 28 कहानियां संक लत है। यह कहानियां नारी के व वध आयाम एवं रूपों को उभारती है। इन कहानियों में नारी संबं धत जो व वध गलत सोच एवं धारणाएं बनी है, उन पुरानी एवं सड़े- गले नियमों के प्रति नारी मुंहतोड़ जवाब देती है।

2.1.9 लड़की जो दिखती पलट कर:

यह कहानी संकलन वाणी प्रकाशन द्वारा प्रका शत कया गया है ।इस संकलन में कुल 30 कहानियां संक लत की गई है। इन कहानियों से क्षमाजी की यथार्थ की समझ और उस पर भरोसा का आत्म वश्वास स्पष्ट दिखाई देता है।

2.1.3 उपन्यास:

2.1.3.1 दूसरा पाठ:

यह उपन्यास वकास पेपर बॉक्स द्वारा प्रका शत कया गया है 1994 में। इस उपन्यास के माध्यम से क्षमा जी ने शक्षा प्रणाली से संबं धत कार्य पर प्रश्न चन्ह लगाया है। आज की वकृत हुई शक्षा प्रणाली में परिवर्तन की अत्यंत आवश्यकता है। समाज ने शै क्षक वातावरण में फैली अव्यवस्था के प्रति सुधार की आवश्यकता की ओर संकेत कया है। जब तक सुधार नहीं तब तक स्थिति में कोई परिवर्तन की गुंजाइश भी नहीं है।

2.1.3.2 परछाई अन्नपूर्णा:

डॉ शर्मा शर्मा का यह उपन्यास राज्य सूर्य प्रकाशन द्वारा1996 में प्रका शत कया गया है। परछाई अन्नपूर्णा की नायिका नौकरी करने वाली स्त्री का प्रतिनि धत्व करती है। नारी

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 2, (April-June 2022

श क्षत होकर स्वतंत्र रूप से जीना चाहती है। आ र्थक रूप से आत्मनिर्भर रहकर अपनी मान सकता में भी परिवर्तन ला रही है।

2.1.3.3 शस्य का पता:

डॉ शर्मा जी द्वारा ल खत यह उपन्यास 1997 में आकाशदीप पब्लिकेशन द्वारा प्रका शत कया गया है। इस उपन्यास में क्षमा जी ने पर्यावरण से संबं धत प्रदूषण का सवाल उठाया है। प्राकृतिक प्रदूषण के साथ-साथ सामाजिक प्रदूषण एवं मनोवैज्ञानिक प्रदूषण भी आपके कथा साहित्य में अ भव्यक्त होता है।

2.1.3.4 मोबाइल:

यह उपन्यास राजकमल प्रकाशन द्वारा 2004 में प्रका शत कया गया है ।इस उपन्यास के माध्यम से क्षमा जी ने महानगरों में जीवन की दिशा तलाश थी लड़ कयों की चुनौतियों को वाणी प्रदान की है ।

2.1.4 स्त्री वषयक लेखों का संग्रह:

2.1.4.1 स्त्री का समय:

यह लेख स्त्री वषयक संग्रह है जो 1998 में मेधा बुक्स दिल्ली द्वारा प्रका शत कया गया है इसमें कुल 28 लेख संक लत कए गए हैं जो साप्ताहिक हिंदुस्तान ,दैनिक हिंदुस्तान , वदुर,कुरुक्षेत्र ,समाज कल्याण, सारिका आदि देश की प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में छपे है ।

2.1.4.2 स्त्रीत्ववादी वमर्श:समाज और साहित्य:

डॉक्टर क्षमा शर्मा ने स्त्री वमर्श से संबं धत पुस्तक का प्रकाशन 2002 में राजकमल प्रकाशन द्वारा कया है, इसमें कुल 30 लेखों को संक लत कया गया है ।

2.1.4.3 औरतें और आवाजे:

डॉक्टर क्षमा शर्मा का यह लेखों का संग्रह आलेख प्रकाशन द्वारा 2005 में प्रका शत कया गया। इसमें कुल 37 लेखों को संग्रहित कया गया है, जो जीवंत लेखों का संग्रह है ।

2.1.4.4 बाजार ने पहनाया बाबी को बुर्का:

यह स्त्री वषयक लेखो की पुस्तक 2008 में पेंगुइन बुक्स द्वारा प्रका शत की गई है। इसमें कुल 27 लेखों को संक लत कया गया है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 2, (April-June 2022

2.1.5 बाल साहित्य:

डॉक्टर क्षमा शर्मा बालकों को बहुत प्यार करती थी। उसका बाल साहित्य बच्चों के लए मनोरंजन के साथ शक्षा का बहुत बड़ा खजाना रहा है । क्षमाजी समय-समय पर बच्चों के लए छोटी-छोटी पुस्तकों को प्रका शत करवाती रही है ।

2.1.6 बंद ग लयों के वरुद्ध:

डॉक्टर क्षमा शर्मा तथा मृणाल पांडे द्वारा संपादित इस पुस्तक का प्रकाशन 2001 में राजकमल प्रकाशन द्वारा कया गया है ।इस पुस्तक में उन्होंने महिला पत्रकारों तथा ले खकाओं द्वारा लखे गए लेखों को एक साथ पुस्तक ग्रुप में समाज के सामने रखा है ।

3 निष्कर्ष:

डॉ क्षमाशर्मा एक महान साहित्यकार थी उनकी साहित्यिक कृतियों में नारी केंद्र में रही है, । उन्होंने नारी जीवन को गंभीर एवं गहनता से उजागर कर अपनी अनुभूति पूर्ण अ भव्यक्ति प्रदान की है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 2, (April-June 2022

संदर्भ ग्रंथ

क्रम सं	पुस्तक का नाम	लेखक	प्रकाशन	साल
1	नारी वमर्श एवं समाज शर्मा का कथा साहित्य	डॉक्टर लता गुजराती	वद्या प्रकाशन	2018
2	स्त्रीत्ववादी वमर्श :समाज और साहित्य	क्षमा शर्मा	राजकमल प्रकाशन	2002
3	बाल वकास और संबं धत क्षेत्र	मीना गानोरकर	राजकमल प्रकाशन	2000
4	समीक्षा	क्षमा शर्मा	दैनिक जागरण	2009
5	कादंबिनी	क्षमा शर्मा	दैनिक जागरण	जुलाई 2007
6	कादंबिनी	क्षमा शर्मा	दैनिक जागरण	फरवरी 2014
7	काला कानून	क्षमा शर्मा	देवदार प्रकाशन	1982
8	कादंबिनी	क्षमा शर्मा	दैनिक जागरण	अप्रैल 2007